International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समकालीन हिंदी कहानी में विकलांगों का जीवन और विविध आयाम

- **डा. रिम्पी खिल्लन सिंह**

विकलांगता की समस्या एक जटिल समस्या है |आज इक्कीसवीं शताब्दी में तकनीक की इतनी अधिक उन्नति के बावजूद भी यह समस्या भौतिक या शारीरिक रूप से ज्यादा सामाजिक स्तर पर अधिक कठिनाईयाँ उपस्थित करती है | अनीमा सेन के अनुसार "समाज का रवैया इस समस्या को भंयकर और उलझा हुआ बना देता है और इसके कारण भौतिक विकलांगता सामाजिक विकलांगता में परिवर्तित हो जाती है जो कि विकलांग व्यक्ति के लिए अधिक दर्दनाक स्थिति है और समाज को भी इसकी ऊँची कीमत चुकानी पड़ती है |" [1] सभ्यता के विकसित होने के साथ साथ विकलांगता की समस्या घटने के स्थान पर बढ़ती ही चली गयी| आज के समय में भले ही चिकत्सकीय विकास बहुत अधिक हुआ है परंतु समाज का नज़रिया इस समस्या को लेकर व्यापक रूप से नहीं बदल सका है | अब बच्चे के जन्म के समय से ही अनेक सावधानियां बरती जाने लगी हैं जिससे जन्म के समय बच्चों में विकलांगता दर कम से कम हो सके| बढ़ती जनसंख्या तथा कम प्रति व्यक्ति आय व गरीबी के कारण इन सब सुख सुविधाओं का लाभ भी समाज के अपेक्षाकृत शिक्षित व साधन संपन्न लोगों को ही अधिक मिला है | ग्रामीण व सुदूरवर्ती क्षेत्रों में आज भी प्रसव घर पर ही करवाए जाते हैं और वहाँ बहुत सी सुविधाएं अभी भी नहीं हैं | इस प्रकार सभ्यता का विकास अपने आप में एक विरोधाभास उत्पन्न करता है कि सुविधाएं तो हैं पर सबके लिए नहीं हैं |

यह समझना आवश्यक है कि विकलांगता का प्रश्न केवल एक आयाम से जुड़ा प्रश्न नहीं है अपितु यह अनेकानेक आयामों और समस्याओं से जुड़ता चला जाता है | यह केवल एक व्यक्तिगत त्रुटि या हानि नहीं है अपितु यह एक सामाजिक सरंचना भी है | हेलेन केलर का मानना है कि "किसी एक या दूसरी परिस्थिति में हममें से हर कोई कभी न कभी अपने आप को असमर्थ पाता है | उदाहरणार्थ एक अत्याधिक लंबाई का व्यक्ति स्वयं को बस के भीतर ठीक प्रकार से सिर ऊंचा करके खड़ा होने में असमर्थ पाता है तो वह अशक्त महसूस करता है" | [2]

हिंदी कहानी में एक लंबे समय तक विकलांगता की समस्या या उससे जुड़े पात्र अनुपस्थित रहे हैं |हिंदी कहानी में यदि कहीं यह पात्र आए भी हैं तो उनकी सामाजिक स्थितियों पर बहुत अधिक विस्तार से चर्चा नहीं हुई है | विकलांगता का एक लैंगिक संदर्भ भी है|इस पक्ष पर अनीता घई अपनी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पुस्तक "डिस्इम्बाडिड फार्म" (Disembodied Form) में लिखती हैं " यूँ तो एक विकलांग बच्चा भले ही वह लड़की हो या लड़का, यह मान लिया जाता है कि उसका होना या न होना एक बराबर है | उसे सामाजिक व आर्थिक रूप से हाशिये पर खड़ा ही माना जाता है | उसका महत्व परिवार में नकारात्मक होता है और सदैव सामान्य बच्चों से उसकी तुलना की जाती है | ऐसे में लड़की का जीवन जो अपंग हो, उसकी स्थिति तो और भी अधिक नारकीय होती है" | [3]

एक आम लड़की को ही भारतीय समाज में शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा जाता है और लड़कों को इस अधिकार को लेकर वरीयता दी जाती है | विकलांग बच्चियों द्वारा शिक्षा अर्जित करना और भी संघर्ष भरा और जोखिम भरा कार्य है | अनीता घई केशब्दों में "भारतीय शिक्षा परिदृश्य में जहाँ सामान्य बच्चों की जनसंख्या का आधे से अधिक भाग विद्यालय का मुँह तक न देख पाता हो और जिनमें दो तिहाई
जनसंख्या सामान्य बच्चियों की हो, ऐसे में विशिष्ट शिक्षा संस्थानों की आशा पालना ही व्यर्थ है" | [4]

हिंदी कहानी ने धीरे धीरे इन आयामों को स्थान देना शुरू किया परन्तु इसमें बहुत समय लगा | डा. रामदरश मिश्र की कहानी "सीमा" ऐसी ही विकलांग बच्ची की कहानी है जो पारिवारिक सरंचना के भीतर उपेक्षा का शिकार होती है | जब उसके पड़ोस में रहने वाला एक बारह वर्षीय लड़का उसे कहता है - "सीमा चलोगी घूमने " [5], तो एक पैर से लाचार सीमा पर अस्तित्व का यह संकट और भी अधिक गहरा जाता है | इसी प्रकार निश्तर खानकाही की कहानी "आधा हाथ, पूरा जीवन" में एक इसाई लड़की मारिया की दारुण कथा है जिस पर उसके आसपास के लोग, यहाँ तक कि उसके पिता भी अत्याधिक दया दिखाते हैं क्योंकि उसका हाथ कटा हुआ है | उसके पिता यह मानते हैं कि मारिया का विवाह कभी नहीं हो सकता और न ही वह अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है | उसका भविष्य एक असहाय लड़की का भविष्य होगा | अपने पिता की इस सोच को लेकर मारिया को बहुत दुख होता है और साथ ही अपने प्रति दयाभाव को लेकर घृणा | वह एक जगह कहती भी है "मुझे पापा की उपस्थिति से उलझन होती है | उनसे भी, उनके दोस्तों से भी " | [6] मारिया के पिता साईमन सदैव उसे विकलांग होने का एहसास कराते हैं और कहते हैं "बेटी ! तुम इस पोज़ीशन में नहीं हो, अब कौन तुमसे विवाह करेगा, मुझे चिंता है कि तुम यह पहाड़ जैसा जीवन बिना किसी स्थायी सहारे के कैसे जिओगी" | [7]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जबकि मारिया चाहती है कि उसे एक सामान्य लड़की की तरह जीवन जीने का अधिकार मिले | उसके संघर्ष को सम्मान की दृष्टि से देखा जाये, दया या करूणा की दृष्टि से नहीं | उसे निरंतर यह अनुभुति होती है कि विकार इतना उसके भीतर नही है, जितना कि यह समाज उसे विकृत करना चाहता है | इस प्रकार कुछ हिंदी कहानियों जैसे कुलदीप बग्गा की कहानी "पोलियो" की विकलांग नायिका मणिका का विवाह एक नपुंसक और अधेड़ व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है |

हिंदी कहानी में मंदबुद्धि व्यक्तियों पर केंद्रित कहानियाँ भी बहुत कम मिलती हैं | जयनंदन की कहानी "भोमहा " में भोमहा एक मंदबुद्धि व्यक्ति है | वह जन्मजात मंदबुद्धि नहीं है अपितु परिस्थितियों वश धीरे धीरे उसका व्यक्तित्व दब जाता है और धीरे धीरे उसकी मानसिक शक्ति कम होने लगती है | वह बचपन से ही इसलिए उपेक्षा का शिकार होता है क्योंकि वह एक अवैध संतान है | किसी प्रकार से उसका विवाह तो हो जाता है परंतु बाद में वह अपनी पत्नी की उपेक्षा का शिकार हो जाता है | पत्नी उससे
घर परिवार के काम करवाती है और उसे एक नौकर की तरह रखती है | "मंदबुद्धि, सुस्त, शिथिल और अनाड़ी से दिखने वाले बैजू भैया शादी के बाद और भी गोबर गणेश की आकृति में ढलते चले गए ..... पुनिया भौजी के आने के बाद उनमें जो सुधार की उम्मीद थी, वह पूरी तरह जाती रही" | [8] इस प्रकार यहाँ लैंगिक विमर्श उलट जाता है | एक पुरुष की विकलांगता का फायदा स्वयं उसकी पत्नी भी उठाती है और उसका और अधिक शोषण करती है |

विकलांगता की सामाजिक सरंचना उन अनुभवों की ओर संकेत करती है जो एक विकलांग व्यक्ति अन्य सामाजिक घटकों के भीतर अनुभूत करता है और समझ पाता है कि अपंगता को एक दारुण समस्या बनाने की ज़िम्मेदारी उन तथाकथित स्वस्थ लोगों की भी है जो स्वयं की तुलना में उन्हें असमर्थ तथा हीन मानते हैं | इसी बात की पुष्टि लिजक्रो ने भी की है जिसे अनीता घई भी उद्धृत करती हैं | वे लिखते हैं कि "मैं विकलांगता की सामाजिक सरंचना को बहुत वर्षों पहले से ही अपने हृदय की गहराइयों
में जानता था | जानता था कि समस्या केवल मेरे शरीर में नहीं है, समस्या कहीं बाह्य वातावरण में भी है और उन बाधाओं के साथ भी जुड़ी है जो समाज हमारे जैसे लोगों के लिए उत्पन्न करता है और यदि समाज चाहे तो इन्हें दूर भी कर सकता है" | [9]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एक विकलांग व्यक्ति को आरंभ में स्वयं भी अपनी विकलांगता स्वीकार करने में समय लग जाता है और बहुत बार यह स्वीकार्यता भी दो तरह की होती है | विनोद कुमार मिश्र के अनुसार "एक प्रकार की स्वीकार्यता में विकलांग व्यक्ति अपनी कमियों और उनके द्वारा उत्पन्न सीमाओं का आंकलन करता है | वह समझ जाता है कि वह क्या क्या कर सकता है और क्या क्या नहीं कर सकता है | इससे वह अपने बारे में एक सही स्वरूप और एक सकारात्मक धारणा विकसित करता है और यही अवधारणा उस व्यक्ति को सामाजिक जीवन में उपयुक्त स्थान दिलाती है" | [10]

हिंदी कहानी ने कुछ सीमा तक विकलांगों के पुनर्वास की समस्या को भी उठाया है उदाहरण के लिए डा. गिरिराज शरण अग्रवाल ने विकलांग जीवन की कहानियाँ नाम से एक संग्रह निकाला और उसकी भूमिका में लिखा - " होना यह चाहिए कि हम ऐसे व्यक्ति में जो किसी कारण कतिपय कमियाँ लेकर जी रहा है, उन विशेषताओं की खोज करें जो स्वस्थ लोगों की अपेक्षा उनमें कई अधिक प्रबल है और जिन्हें मुखरित होने का अवसर नहीं मिल रहा है | इस प्रक्रिया में हम सामूहिक रूप से उस बोझ को हलका कर पाने में समर्थ होंगे जो विकलांगों को नज़रअंदाज़ करने के कारण समाज पर दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है" | [11]

अलका सरावगी की कहानी "दूसरी दुनिया" अप्रत्यक्ष रूप से विकलांगों के पुनर्वास के प्रश्न को उठाती है जिसमें एक माँ को इसलिए समाज से कटकर रहना पड़ता है क्योंकि उसने मानसिक रूप से एक विकलांग बच्चे को जन्म दिया है | उसका पति भी उसे इसीलिए छोड़ कर चला जाता है क्योंकि वह यह बर्दाश्त नहीं कर पाता कि उसका बच्चा मानसिक रूप से विकलांग है परन्तु एक माँ समाज द्वारा विस्थापित अपने बच्चे फिर से स्वीकार्यता दिलाने का भरसक प्रयत्न करती है और उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है | इसी प्रकार उर्मिला शिरीष की कहानी "बिना सुरताल" भी पुनर्वास के प्रश्न को अत्यंत गंभीरता से उठाती है और उन संस्थाओं के सत्य को भी उद्घाटित करती है जो पुनर्वास के लिए सरकार से पैसा वसूलते हैं परंतु वहाँ विकलांगों की समस्याओं से संघर्षरत होने के स्थान पर उनका ही शोषण किया जाता है | उदय जो कि एक गूँगा बच्चा है, वह परिवार के भीतर अन्य भाई बहनों के साथ एक सामान्य जीवन नहीं जी पाता | उसके दूसरे भाई बहन उसे गूँगा कहकर चिढ़ाते हैं इसलिए उसके माता पिता उसकी दशा को देखकर बाकी लोगों के कहने पर एक ऐसे संस्थान में छोड़ आते हैं जो ऐसे ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बच्चों के पुनर्वास हेतु बना है परंतु उदय का सामना जब वहाँ की सच्चाई से होता है तो वह दंग रह जाता है | वहाँ का वार्डन गूंगी बहरी बच्चियों का शोषण करता है | जब उदय इस बात की शिकायत वहाँ पढ़ाने वाली अध्यापिका से करता है तो वार्डन उसे पीटता है और कहता है "क्या देखा था तूने, बोल हरामी गूँगे लिखकर शिकायत करता है, यह ले अब झेल" कहते हुए उस पर अनगिनत लातों और घूंसों की बौछार कर देता है | [12]

इस प्रकार हिंदी कहानी विकलांगता की समस्या के अनेक पक्षों को गंभीरता से उठाना आरंभ कर चुकी है और अब केवल यह कहानियाँ उनके प्रति दया और सहानुभूति के पक्ष को उजागर नहीं करती अपितु उसकी सामाजिक सरंचना के विभिन्न संदर्भों को भी पाठक के समक्ष प्रस्तुत करती है और उनके प्रति होने वाली उपेक्षा के सूक्ष्म रूपों पर प्रकाश डालती है | हालांकि अभी भी इस प्रकार की कहानियों की संख्या कम है परंतु हिंदी कहानी के निरंतर परिपक्व होते हुए रूप को देखते हुए यह संभावना अभिव्यक्त की जा सकती है कि भविष्य में इस जटिल समस्या और विमर्श से जुड़ी कहानियाँ और अधिक
लिखी जायेंगी और सूक्ष्म रूप में इस समस्या के प्रत्येक पक्ष को उसके बहुआयामी संदर्भों के साथ जोड़कर कहानी में ढाला जा सकेगा |

संदर्भ सूची :

1. Psycho-Social Integration of the Handicapped, Anima Sen, P-2
2. Psycho-Social Integration of the Handicapped, Anima Sen, P-101
3. Disembodied Form, Anita Ghai, P-58
4. Disembodied Form, Anita Ghai P- 59
5. सीमा, रामदरश मिश्र, इकसठ कहानियाँ पृ -130
6. आधा हाथ : पूरा जीवन, निश्तर खानकाही, विकलांग जीवन की कहानियाँ, पृ - 70
7. आधा हाथ : पूरा जीवन, निश्तर खानकाही, विकलांग जीवन की कहानियाँ, पृ, 73
8. आधा हाथ : पूरा जीवन, निश्तर खानकाही, विकलांग जीवन की कहानियाँ, पृ, 75

9. Disembodied Form, Anita Ghai, 2003 (Crow's thoughts on Disabled Discourse)

10. विकलांगता समस्याएँ व समाधान, विनोद कुमार मिश्र, पृ - 43

11. विकलांग जीवन की कहानियाँ, डा.गिरिराज शरण अग्रवाल भूमिका से

12. बिना सुरताल, उर्मिला शिरीष, गूंज पत्रिका, कहानी विशेषांक, अंक 1-3, संयुक्तांक, पृ - 57

डा. रिम्पी खिल्लन सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय
सिविल लाइन्स,
दिल्ली 110054
Email : rimpi.khillan@gmail.com